



दिल पर जोर नहीं-1

“मेरी इच्छा तो अपनी हवस पूरी करने की थी, बस जिस्म की जरूरत को पूरा करना चाहती थी। मैं उसे हर तरह से उत्तेजित करती रहती थी कि वो मौका मिलते ही मेरी छातियाँ दबाये और मेरे दूसरे अंगों को मसल दे। ...”

Story By: नेहा वर्मा (nehaumaverma)

Posted: Saturday, September 24th, 2005

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [दिल पर जोर नहीं-1](#)

दिल पर जोर नहीं-1

मेरा नाम चित्रा है। अभी मैं २२ वर्ष की हूँ। इसी साल मैंने एम ए किया था। मेरे कॉलेज समय में यानि एक साल पहले मैं एक क्लास में पढ़ने वाले साथी के साथ प्यार कर बैठी थी, यह जानते हुए भी कि मेरी सगाई हो चुकी है।

आलोक एक सुन्दर और व्यवहारिक लड़का था। वो जिम में जाने वाला कसे जिस्म का लड़का था। मैं उसकी शरीर के कट देख कर उस पर मर मिटी थी। जब मैं उससे अधिक बात करने लगी तो वो भी मेरी तरफ़ आकर्षित हुआ। धीरे धीरे ये निकटता में बदल गई और एक दिन उसने मुझे प्रोपोज कर ही दिया। मैं तो पहले ही उस पर मरती थी। उसके प्यार को मैंने तुरन्त स्वीकार कर लिया। अब हम छुप छुप कर गार्डन में, झील के किनारे, लाइब्रेरी में या रेस्टोरेन्ट में मिलने लगे थे पर कॉलेज में सावधान रहते थे कि कहीं बदनाम ना हो जाये।

अभी तक बस उसने मेरा हाथ ही पकड़ा था। पर मेरी इच्छा तो अपनी हवस पूरी करने की थी, बस जिस्म की जरूरत को पूरा करना चाहती थी। मैं उसे हर तरह से उत्तेजित करती रहती थी कि वो मौका मिलते ही मेरी छातियाँ दबाये और मेरे दूसरे अंगों को मसल दे। कभी ऐसा भी हो जाये कि मुझे अकेले में चोद दे और मेरी प्यास बुझा दे। पर वो मेरे अंगों को हाथ लगाने से भी डरता था। वैसे मुझे चुदाई का कभी भी मौका नहीं मिला था। मैं एक दम अनछुई कली थी, जो खिलने को बेताब थी।

एक दिन आलोक ने मुझे बताया कि शाम को उसके मम्मी पापा एक दिन के लिये मथुरा जा रहे हैं। शाम को घर पर आ जाना। मेरे दिल में खुशी की लहर दौड़ पड़ी। मुझे लगा कि आज मौका है, सारी इच्छायें पूरी कर लूंगी। मेरा जिस्म तरावट से भर उठा। मेरे बदन में झुरझुरी सी आने लगी, चुदाई की सोच से मैं बैचेन होने लगी, सपनों में डूबने लगी।

बड़ी मुश्किल से शाम हुई। मैंने मोबाईल से पता किया, उसके मम्मी पापा जा चुके थे। मैंने अपनी स्कूटी उठाई और आलोक के घर पहुंच गई। जैसे ही मैं उसके घर पहुंची, उसके चेहरे पर खुशी झलकने लगी। अन्दर आते ही उसने मेरा गर्म जोशी से स्वागत किया। फिर हम एक सोफ़े पर बैठ गये। उसने धीरे से मेरा हाथ अपने हाथों में ले लिया और बातें करने लगी। पर मेरे दिल में तो कुछ और ही था। मेरा तो जिस्म ही जल रहा था। मैं चाह रही थी कि आज हम दोनों अकेलेपन का भरपूर फ़ायदा उठायें। वो सब कर डालें जो हमारे मन में है।

मैंने ही पहल करना उचित समझा... आलोक तो बस अपना प्रेमालाप ही करता रहा। मैंने उसकी जांघों पर हाथ रख कर उसे दबाया और उसकी काम वासना को जगाने की कोशिश की। उसके जिस्म की कंपकंपी मैंने महसूस कर ली। वो बोलता रहा, मेरी आँखें बन्द होने लगी और जाने कब वो मेरे कब्जे में आ गया। उसके होंठ मेरे होंठों से लग गये और उसका बोलना बन्द हो गया। पुचकारी की आवाजें गूँजने लगी। जीभ मुँह में अन्दर बाहर आने जाने लगी। उसका लण्ड खड़ा हो गया और मेरा काम बन गया।

उसने मुझे चूमते हुए सोफ़े पर गिरा दिया और मेरे जिस्म पर उसका बोझ आ गया। मेरे सीने पर उसके हाथ घूमने लगे। मेरी दिल इच्छा पूरी होने लगी। मुझे सोफ़े में तकलीफ़ हो रही थी। मैंने उसे कहा कि मुझे बिस्तर पर ले चलो। उसने मुझे अपनी बाहों में एक खिलौने की तरह उठा लिया। उसके बाहों की ताकत मुझे मालूम हो गई। उसने मुझे बिस्तर पर लेटा दिया और मेरे जिस्म पर अपना बोझ डाल दिया।

उसकी काया मेरी काया से चिपकी जा रही थी और लण्ड नीचे मेरी चूत पर दबाव डाल रहा था। बिस्तर में मुझे सहजता लग रही थी। उसके हाथ मेरे स्तन दबाने लगे थे और मुझे असीम आनन्द दे रहे थे। मेरी चूत पनीली हो चुकी थी। मेरा जिस्म अब चुदाई मांग रहा था, पर कैसे कहूँ? मैंने इशारों से काम लेना बहतर समझा। मैंने उसका लण्ड पकड़ लिया

और दबाने लगी ।

इसका तेज असर हुआ और उसने अपनी पेन्ट उतार फेंकी और नंगा हो गया । मैंने जानबूझ कर शरमाने की एक्टिंग की और उसे नंगा देख कर कहने लगी, 'ये क्या आलोक ? क्या कर रहे हो ?'

'प्लीज चित्रा, मुझे मत रोको... वर्ना मैं पागल हो जाऊंगा !'

'नहीं, आलोक नहीं, देखो मेरी सगाई हो चुकी है, ये ठीक नहीं है ?' पर इतनी देर में वो मेरे कपड़े खींच चुका था । मैंने भी सरलता से उसे उतारने दिये, चुदना जो था ।

'बस चित्रा अब चुप हो जाओ, इस अन्तर्वासना की लजन में कुछ सही गलत नहीं होता है !' कह कर वो मेरे ऊपर फिर से चढ़ गया ।

मैंने अपनी दोनों टांगें खोल ली और चूत का द्वार खोल दिया । पहले तो वो मेरा जिस्म दबाता, मसलता रहा । फिर उसका लण्ड मेरी चूत में घुस पड़ा और उसने चूतड़ों का पूरा जोर लगा कर अन्दर तक उतार दिया । मेरे मुख से जोर की चीख निकल पड़ी । साथ में वो भी कराह उठा । जल्दी से उसने अपना लण्ड निकाल लिया ।

'हाय रे मुझे लग गई है... !' उसके लण्ड के सुपाड़े के पास की झिल्ली फ़ट गई थी । मेरी चूत में से भी खून निकल आया था ।

'अरे ये खून !' मैंने भी घबरा गई, मुझे भी अन्दर दर्द हो रहा था । सारा नशा काफ़ूर हो गया था । हम दोनों बाथरूम की ओर भागे । पानी से साफ़ करने लगे, मैंने देखा तो उसके लण्ड की पतली सी स्किन थी, जो सुपाड़े के आस पार से चिर गई थी, साफ़ नजर आ रही थी । मेरी चूत में से बून्द बून्द करके अभी भी खून बह रहा था । मैं घबरा उठी । यह तो मैं जानती थी कि झिल्ली होती है और पहली बार चुदने पर वो फ़ट जाती है पर नहीं मालूम था कि

उसके बाद क्या करना चाहिये ।

मैंने तो अपने बेग में से सेनेटरी नेपकिन निकाला और नीचे लगा दिया । हमारा पहला अनुभव था इसलिये कुछ समझ में नहीं आया तो मन मार कर मैंने चुदाने का विचार अभी छोड़ दिया । हम दोनों आपस में यही सोचते रहे कि अब क्या करें । कुछ देर बाद मैं घर चली आई । दर्द अभी भी था ।

सुबह मैंने पैड हटा कर देखा तो सभी कुछ सामान्य थ, दर्द भी नहीं था । कॉलेज जाने से पहले मैं आलोक के घर गई कि उसे बता दू कि मैं अब ठीक हूँ । उसने भी भी बताया कि वह भी अब ठीक है ।

उसने कहा- क्या अब फिर से ट्राई करें ?

मैंने सोचा- अगर दर्द नहीं हुआ तो ठीक है वर्ना नहीं करेंगे ।

हम जल्दी से बिस्तर पर आ गये । आलोक ने और मैंने जल्दी से कपड़े उतार लिये । कपड़े उतारते ही हम एक दूसरे को देखते ही रह गये । आज तो मैं होश में थी, उसका नंगा जिस्म, मसल्स उभरी हुई, लण्ड मदमस्त सा लहराता हुआ मेरे होश उड़ाने के लिये काफ़ी था । मेरे सेक्सी बदन को देख कर उसका हाल भी बुरा होने लगा । हम भाग कर एक दूसरे से लिपट गये । दो जवान जिस्म टकरा उठे, आग बरसने लगी । उसका मर्द मेरी गहराईयों को ढूँढने लगा । हम बिस्तर पर गिर पड़े और एक दूसरे को ऊपर नीचे लोट लगाने कर मचलने लगे । मन चुदने के लिये मचल उठा ।

लोट लगाते हुए वो मेरे ऊपर आ गया और अब उसके चूतड़ मेरी चूत पर अपने लण्ड को दबाने लगे... आश्चर्य हुआ कि इस बार बिना किसी तकलीफ़ के उसका लण्ड मेरी चूत में उतर गया । मेरी पनीली चूत ने सहजता से लण्ड को अपना लिया । मुझे मीठे से अहसास के साथ खुमारी चढ़ने लगी । आज लगा कि लड़कियाँ चुदने के लिये इतना मरती क्यों हैं ।

मैंने भी अपनी चूत का पूरा दबाव उसके लण्ड पर डाल दिया ।

धक्के चल पड़े । आलोक की कमर आगे पीछे होने लगी । हम मस्ती की सीढ़ियाँ चढ़ने लगे । सिसकारियाँ निकलने लगी... आलोक का भी यह पहला अनुभव था और मेरा भी । धक्कों की तेजी बढ़ती गई । हम दोनों आनन्द की दुनिया में मस्त हो गये । चूत-लौड़े की मीठी मीठी आग में हम जलते रहे ।

‘हाय मेरे राजा, मस्त कर दे मुझे... चोद दे... जरा और ... हाय रे !’

‘मेरी जानू, मस्त है रे तू... कितना मजा आ रहा है !’ हम चुदाई करते रहे और कुछ कुछ मस्ती में बोलते भी जा रहे थे ।

कुछ ही देर में मैं चरमसीमा पर आ गई । और मस्ती के मारे मेरा रस छूटने लगा । मैं झड़ने लगी । मेरी आंखें बन्द हो गई । झड़ने का सुहाना आनन्द आने लगा । कुछ ही देर में आलोक ने भी अपना लण्ड बाहर खींच लिया और मेरी छाती पर अपना वीर्य छोड़ने लगा । मुझे बड़ा गन्दा सा लगा । मैंने उसे कहा कि वो दूसरी तरफ़ अपना रस गिराये । मैंने पानी से साफ़ किया और हम अब सुस्ताने लगे । इस के बाद मैं कॉलेज चली गई ।

इसके बाद हमारा इस तरह का कार्यक्रम कभी मौका मिलने पर ही होता था ।

मेरी पढ़ाई पूरी हो चुकी थी । एक साल बीतने को आ गया था । हम दोनों कितनी ही बार घर से भाग कर शादी करने का प्रोग्राम भी बना चुके थे । पर हममें इतनी हिम्मत ही नहीं थी । मेरी एम ए की डिग्री भी मिल चुकी थी । मेरी शादी भी कुछ दिनों बाद हो गई । मैं अपने पति के साथ एक अलग घर में रहने चली गई थी ।

एक बार दिन को आलोक मेरे घर आ गया । मेरे पति काम पर गये हुए थे । उसने बताया कि टीचर की कुछ जगह निकली है, आवेदन भर दो । तब मैंने अपने पेपर टटोले और सभी

निकाल कर आवेदन जमा करा दिया। आलोक ने एकान्त पाकर मुझसे एक बार चुदाई के कहा तो मैं मान गई। मेरा मन फिर मचल गया। आलोक का लण्ड ही इतना प्यारा था कि मन चुदने को बेकरार हो उठा।

हम दोनों ने अपने कपड़े उतारे और चुदाई में लग गये। मस्ती का सफ़र चल ही रहा था कि जैसे बिजली गिर पड़ी। आलोक का लण्ड मेरी चूत में ही था और मेरा पति सामने खड़ा था। हमारा सारा नशा गायब हो गया। आलोक तुरन्त उछला और अपनी पेन्ट पहनने लगा। मेरा पति आपे से बाहर हो चुका था। उसने पास में पड़ी कुर्सी उठा कर आलोक को दे मारी। वो पेन्ट पहन भी नहीं पाया था कि कुर्सी का वार उस पर आ पड़ा। वो बुरी तरह से गिर कर घायल हो गया। पर उसकी फुर्ती गजब की थी। मेरा पति दूसरा वार करता उसने अपनी पेन्ट ठीक की और एक तरफ़ हो गया। दूसरे ही पल आलोक ने लपक कर उसे पकड़ लिया और उसके पेट पर जबर्दस्त घूसा मारा और साथ में दूसरे हाथ से उसके चेहरे पर वार कर दिया। मेरा पति आलोक से कमजोर था। वो लहरा कर गिर पड़ा। आलोक ने फुर्ती से छलांग लगाई और वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

मेरा पति जब उठा तो उसका चेहरा खून से भरा था। उसने डंडा उठाया और मुझे बुरी तरह से मारना चालू कर दिया। मैं जोर जोर से रो कर उससे पांव पड़ कर माफ़ी मांगती रही पर उस पर तो जैसे खून सवार था। मैं रोती रही, मेरे जिस्म पर डण्डों की मार से नील पड़ चुकी थी। मेरे बालों का एक गुच्छा टूट कर वहाँ पड़ा था। पीठ में असहनीय दर्द हो रहा था। मुझे उसने एक कमरे में बन्द कर दिया। मैं दरवाजा भड़भड़ाती रही और माफ़ी मांगती रही। वो मुझे माँ बहन की गालियाँ देता रहा। अचानक उसके बाहर जाने की आवाज आई। मेरी नजर खिड़की पर पड़ी, मैंने जल्दी से पट खोला और कूद कर बाहर निकल आई। भाग कर बाहर आई तो दो-तीन पड़ोसी बाहर खड़े थे। मेरी चीख पुकार से शायद वो वहाँ आ गये थे।

पड़ोसी ने कहा, 'चित्रा बेटी, वो शायद पुलिस थाने गये हैं !'

मैं और डर गई। आलोक के बारे में वहाँ कोई कुछ नहीं जानता था। मुझे लगा अब मुझे यहाँ रहने में खतरा है। मैंने तुरन्त अन्दर गई और एक एयर बैग में सलवार, कुर्ते जल्दी जल्दी भरे, तभी मेरी नजर मेरे सर्टिफिकेट्स पर पड़ी, उन्हें भी मैंने रखा और कमरे में जहाँ मैं पैसे रखती थी, रुपये पैसे लिये और अपने गहने उठा लिये, फिर पति कि अलमारी से उसके पैसे निकाले और बाहर आ गई। तब तक घर के बाहर आठ दस लोग इकट्ठे हो गये थे।

मैंने कहा, 'भाई साहब ! मैं मायके जा रही हूँ... और पिटाई नहीं सह सकती हूँ !' पड़ोसियों मेरी मदद की और पास में जा रहे टूसीटर को रोका और मां के घर की तरफ़ रवाना हो गई। फिर मुझे लगा कि वो तो वहाँ भी आ जायेगा। आगे जाकर मैं टूसीटर से उतर गई। वही खड़ी खड़ी सोचती रही। मुझे अपनी जिन्दगी इस छोटी सी गलती के कारण अन्धकारमय नजर आने लगी थी।

मैंने एक बड़ा कदम उठाने का निश्चय कर लिया और रेलवे स्टेशन पहुंच गई। दिल्ली की ट्रेन खड़ी थी। टिकट लिया और बैठ गई। गाड़ी जाने में एक घंटा का समय और था। मैं एक कोने में चुन्नी सर पर डाल कर मुँह छुपाये हुए थी। दिमागी परेशानी के मारे मुझे पता ही नहीं चला कि ट्रेन कब चल दी और मैं दिल्ली कब आ गई। बिना किसी लक्ष्य के मैं निजामुद्दीन से बाहर आ गई। सवेरे का समय था। एक रेस्टोरेंट में चाय बिस्किट खाये और फिर मैं आगे बढ़ी। थक कर एक चर्च के बाहर बैठ गई। मुझे नहीं पता था कि दो नजरें मुझे कब से देख रही हैं। बैठे बैठे मेरी झपकी लग गई। अचानक मेरे सर पर किसी का हाथ लगा। मैं चौंक गई और घबरा गई। नींद से जाग गई।

'उठो, बेटी, ये जीजस का घर है... सभी दुखियारों का आसरा... !'

सामने चोगा पहने कोई पादरी था। मुझे प्यार भरी नजरों से देख रहा था। मुझे लगा कि ये दया का फ़रिश्ता कौन है।

‘आ जाओ... मेरे साथ...’ उसने अपना हाथ बढ़ा दिया। उसके बूढ़े हाथों को मैंने थाम लिया और मेरी रुलाई अब जोर से फूट पड़ी...।

‘रो लो बेटी, मन हल्का हो जायेगा।’ मेरी रुलाई कम हुई तो मन मजबूत करके मैं उनका हाथ थामे चर्च परिसर में प्रवेश कर गई।

चित्रा जिंदगी के किस मोड़ पर पहुंची ... पढ़े भाग 2 में

Other stories you may be interested in

पाठिका संग मिलन-1

प्रिय पाठको, मेरी स्वैपिंग सम्बन्धी कई कहानियाँ अन्तर्वासना पर आई हैं जिन पर बहुत सारे पाठक-पाठिकाओं की प्रतिक्रियाएँ मिलीं। उनमें खास बात यह थी कि महिला पाठिकाएँ पुरुष पाठकों से कहीं ज्यादा उत्साहित थीं। यद्यपि हरेक के साथ अलग अलग [...]

[Full Story >>>](#)

खड़े लण्ड की अजीब दास्ताँ-1

आदाब दोस्तो! मैं आमिर एक बार फिर से आपके लिए अपनी गर्म कहानी लेकर आया हूँ. इस कहानी को शुरू करने से पहले मैं आपको अपनी पिछली कहानी के बारे में संक्षिप्त जानकारी देना चाहूंगा ताकि आप इस कहानी को [...]

[Full Story >>>](#)

इस हसीन रात के लिए थैंक यू

“हाय नन्दिनी, कैसी हो?” रात के कोई ग्यारह बजे रहे थे, नन्दिनी सोने की तैयारी कर रही थी। सुबह जल्दी उठना था। नीट की कोचिंग साढ़े छह बजे से प्रारम्भ हो जाती है। लेकिन व्हाट्सएप पर आए इस मैसेज ने [...]

[Full Story >>>](#)

बारिश की बूँदें और वो

मेरे प्यारे दोस्तो, मैं रॉकी एक बार फिर हाज़िर हूँ आपकी सेवा में, सभी को मेरा नमस्कार! मेरी पिछली कहानी इंजीनियरिंग की लड़की की पहली चुदाई पर आपके आये ईमेल के लिए सभी का शुक्रिया अदा करता हूँ. इस स्टोरी [...]

[Full Story >>>](#)

एक और अहिल्या-9

तभी जोर से बिजली कड़की. एक क्षण को तो पूरा आलम एक अत्यंत चमकदार रोशनी में नहा गया लेकिन इस के साथ ही लाइट चली गयी घड़ ... घड़..घड़..घड़..धड़ाम ... धड़ाम!!!! इतनी जोर की आवाज़ आयी कि जैसे बिजली सामने [...]

[Full Story >>>](#)

